शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संपादकीय

पवनार को मैं पावर हाउस बनाना चाहता हूं

विनोबा

पवनार को मैं पावर हाउस बनाना चाहता हूं। वहां एक ताकत पैदा करना चाहता हूं। अभी तक आप क्रांति-कार्य में लगी थीं, अब ब्रह्मविद्या-मंदिर में हैं, तो आंदोलन में से एक हिस्सा गायब हो गया ऐसा हम नहीं मानते हैं, बल्कि यहां से ही आंदोलन को शक्ति मिलेगी।

ग्रामदान के क्रांति-विचार की बुनियाद है नया मन, परिवर्तित मन। पुराना मन पुराने ढंग से सोचता है। राग-द्वेष, मानापमान, ऊंच-नीच भावना, अहंकार, वासना आदि कायम रखकर हम सोचते हैं। वैसी आदत से चित्त को छुड़ाना चाहिए। चित्त को एक नया परिवेश प्राप्त होना चाहिए।

पुराने जमाने से भारत में संतों ने पदयात्रा की। उसमें एक दृष्टि थी। वह थी चित्त-निर्माण की। आज भी मानव के सामने असली समस्या है चित्त-निर्माण की। चित्त विकारों में न जा कर के निर्विकार भूमिका में रहे और जो शक्ति का स्रोत अंदर आत्मा में है, उसका स्पर्श हो। इस प्रकार के चित्त का नमूना देखने को कहीं मिलेगा, तो वह विश्व में फैल सकता है। उसकी चाह भी विश्व को है। तो यहां ब्रह्मविद्या-मंदिर में उसकी अल्प-सी कोशिश चलती है। बहनों को बहुत ज्यादा मार्गदर्शन के बिना जिसको हम विधि-निषेध कहते हैं ऐसे विधि-निषेधात्मक मार्गदर्शन के बिना मिल कर संचालन कर रही हैं। तो चित्त को नया परिवेश मिलना चाहिए। उसकी अनुभूति यहां पर सबको होनी चाहिए। ऐसा होता है तो बाहर जाकर एक-एक प्रांत संभाल कर जो काम बन सकता है, उससे बहुत ज्यादा काम बनेगा, इस कल्पना पर ब्रह्मविद्या-मंदिर खड़ा है। यहां हमें रहना है इसका मतलब यह कि विश्वाभिमुख हो कर रहना है। सारे विश्व के साथ हमारा अनुबंध होना चाहिए। हमें ऐसी शक्ति हासिल करनी होगी कि विश्व की समस्याओं को हल करने की तरकीब हम ढूंढ निकालें। सब समस्याओं का परिहार शांति में है। जो मनुष्य पूर्ण शांत है उसने सब समस्याओं का परिहार कर लिया है। उसके सामने कोई समस्या खड़ी ही नहीं होती। समस्या सामने खड़ी हो, उस पर चिंतन हो और फिर उसका परिहार हो - यह तीनों चीजें उसके लिए खतम हैं। ज्ञानदेव महाराज ने कहा है - **ऐलीच थडी सरलें, मायाजळ** - उसका मायाजल तो इसी किनारे खतम हो गया। इसलिए यहां जो बैठे हैं, उनके सामने वह आदर्श होना चाहिए कि पूर्ण शांति हो। जो भी क्रियाएं हों, वे अपने सादे स्वरूप में हों।

मिला तो अनंत, नहीं तो शून्य !

इसलिए शांति की संस्था में मनुष्य रहे और मान लीजिए वह शांति का पार्ट नहीं कर पाये तो क्या होगा ? आखिर नाटक ही तो करना है ! नाटक में हरिश्चंद्र का पार्ट किया तो बीच में झूठ नहीं बोल सकते। पार्ट करते हुए झूठ बोलेंगे तो सारा नाटक खराब हो जायेगा। इसलिए ब्रह्मविद्या-मंदिर में खतरा है कि यहां या तो उत्तम चीज देखेंगे, नहीं तो सारा प्रयास व्यर्थ जायेगा। इतनी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

खतरनाक दूसरी संस्था नहीं। दूसरी संस्थाओं में ऐसा होता है कि मिले तो दस लाख, नहीं तो दस हजार तो हैं ही। यहां मिला तो अनंत नहीं तो शून्य! इसलिए यहां ब्रह्मविद्या से छोटा नाटक नहीं बन सकता। मुझे अगर कोई ऐसी धमकी दे कि या तो अनंत मिलेगा या शून्य, तो मैं कहूंगा कि शून्य मिले तो भी मुझे यह करना है। दस-पांच रुपये मिलाने में मुझे रस नहीं। या अनंत हासिल करें या शून्य!

उद्देश्य और शब्द आपको आगे ढकेलेंगे

यहां हम जो प्रयोग कर रहे हैं, उसका स्तर हम याद रखें तो बस है। मनुष्य जो बनता है, वह अपने सामने जो ध्येय रखता है और मुख से जो शब्द उच्चार करता है, उससे बनता है। गणेशजी का वाहन चूहा है। वह छोटा-सा है, लेकिन उसका महत्व बहुत है। क्योंकि गणेशजी ने उसको अपना वाहन माना। उसका उद्देश्य महान है। तो, आप भले ही कुछ करते नहीं हैं, लेकिन ऊंचा ध्येय सामने रखते हैं और उसका उच्चारण करते हैं, तो उतने भर से आगे बढ़ेंगे। उद्देश्य और शब्द आपको आगे ढकेलेंगे।

ब्रह्मविद्या-मंदिर का 'नेति नेति' स्वरूप

ब्रह्मविद्या-मंदिर में नं. एक, ब्रह्मविद्या की भूख, नं. दो वैराग्यवृत्ति और नं तीन चित्त पर कोई अपनी जिम्मेवारी का बोझ न हो। बस इतनी ही योग्यता काफी है। बाकी नियम आदि विशेष नहीं होंगे। स्वाभाविक विकास की प्रक्रिया होगी। ब्रह्मविद्या-मंदिर को नियम से बांधने की मेरी तैयारी नहीं है। और नियम के बगैर वह नियमबद्ध चलेगा, ऐसी मैं अपेक्षा करता हूं। ब्रह्मविद्या-मंदिर के बारे में मेरी जो कल्पना है, उसे शब्दों में प्रकट करना कठिन मालूम होता है। क्या ब्रह्मविद्या-मंदिर को -

स्वावलंबी होना चाहिए ?	नहीं
वह परावलंबी रह सकता है ?	नहीं
उसमें अनियमितता चल सकेगी ?	नहीं
उसे नियमों में जकड़ना उचित होगा ?	नहीं
उसमें कुछ निश्चित अध्ययनक्रम हो ?	नहीं
क्या स्वैर अध्ययन चलेगा ?	नहीं
वहां प्रार्थना अनिवार्य हो ?	नहीं
प्रार्थना के बगैर निष्ठा बन पायेगी ?	नहीं
वहां शरीर-परिश्रम अनिवार्य होगा ?	नहीं
शरीरश्रम की उपेक्षा करना उचित होगा ?	नहीं
वहां कोई मार्गदर्शक चाहिए ?	नहीं
बगैर मार्गदर्शक के काम चलेगा ?	नहीं
वहां सुस्वादु भोजन करना उचित होगा ?	नहीं
स्वादरहित, बेस्वाद भोजन चलेगा ?	नहीं

इस तरह उसका 'नेति नेति' स्वरूप है।

(ब्रह्मविद्या मंदिर : एक अभिनव दर्शन)